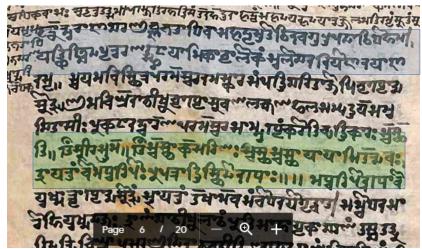
Title: Dhvanya Loka of Shri Ananda Vardhana (With Lochana by Shri Abhinava Gupta)



लोचनम्
श्रीभारत्ये नमः
अपूर्वे यद्वस्तु प्रथयति विना कारणकलां
जगद्भावप्रख्यं निजरसभरात्सारयति च।
क्रमात्प्रख्योपाख्याप्रसरसुभगं भासयति तत्
सरस्वत्यास्तत्त्वं कविसहृद्याख्यं विजयते ॥



लोचनम्

भट्टेन्दुराजचरणाब्जकृताधिवास
हृद्यश्रुतोऽभिनवगुप्तपदाभिघोऽहम्।

यत्किचिद्प्यनुरणन्स्फुटयामि काव्या
लोकं स्वलोचननियोजनया जनस्य।।

ध्वन्यालाकः श्रीनृहरये नमः स्वेच्छाकेसरिणः स्वच्छस्वच्छायायासितेन्दवः। त्रायन्तां वो मधुरिपोः प्रपन्नार्तिच्छिदो नस्ताः॥

Ref: https://archive.org/details/dhvanyaloka-all-pdf/Dhvanyaloka%20Praksa%20Hindi%20Vyakhya%20Jaganath%20Pathak%20Chowkambha/page/n59/mode/2up?view=theater



विनमसम्बरीअपयिक्यग्रवीमः विविक्यकित्मः॥ विजयभारत्भे अध्यक्षेत्र विदेशस्य भगानियम् । इत्रेरणम् निग्रार में ग्रह्मभाग्रे भागा प्राप्त के प्र ग्रायिक्ज्वनीक्भाभाष्ट्राय्य १६ वर्षे विकास भस्य यभभुरिएउ: मीभक्षित्रवयुप्य भिन्न प्रभूष भ्राप्तियुक्तवर्भभूगणीकान्युनेष्वरानेमञ्ज्ञे विचान ि व्यक्तिमित्रे, न्यनं यन्त्रं भूमयिति। करणकले एगम् न्याष्ट्रिरण भहरपुरविष स्नर्षिय स्ट्राइन स्ट्राइन याउउद्गास्य भुद्रकित्रमण्ड्याष्ट्रविष्य उपा अस्ति। भग्नमाउद्दर्शनानुभूना उपमानीमा अस्त्रभन् निर्मा भर्या भूरमेरिए भरवा भरेरिकिर यह द्वामके सुद्धिय अविश्वा विश्वा क्षित्रं कवीर कि क्षा परवनी अठिए वस्थान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान भन्ना भारतक निर्माद निर्माद निर्माद में किया भारतक में किया के किया किया के किया किया के किया किया किया के किया के किया के किय यभागिकिति उद्गायह भुद्र किया अर्थ सम्भाग स्थाप ह चेत्ररगाहभमुद्दे हववन क्रायाती आपना सम्मानिक भिडुक्यण्यसम्भद्धित्रभूषयीभाष्ट्रभयार्थ्यः र्गः, उस्योद्धार्मे विक्यू विक्या द्वारा प्राप्त कार्या कार्या प्राप्त कार्या यगीविनिभण एपमा एवं अवस्ति वा विगान भिक्र भाष्ट्रीर विर्वेद्धवसम्पर्धः, अल्पिल्यां १३ दिस्काभि।

मीं प्रात्त

उस्यान्थर्भे रागाति गस्ति गर्भेर किर केर भारत भिति, भण्याकि विद्धं यह वर्गम् वर्ष्ण्यं मंत्रान्दीन स्तु अभिति एगभभूमाउत् । हर माला विरा माउटा विम् गडेरडेर अक्सइ र्ग्याः,गम् उर्देक्रीशिष्टाष्ट्रांष्ट्रज्ञां, संसभगउय रेज्ञ उद्दीम् मुम्बिर नाकां मेग्रहिग् फक् जंयर्कमार्केर् अस्थ्य क्मर्व क्ष्य एकियं, उस्पार्जिसी भेगम में, यर्गमश्रू गाउरा स. व लिरीयरियुतुन्य व विव भर्मार्थमन्तर ि । या अल्लामिन्डः भार हे रह संयुष्टः प्रहर स्टूर हो भीट हो हो. वा क्षा भिमन्ने ने करिक थेका अचे उन्ने के विषय इभव उत्ता राषा ग्राथियमञ्जाविभाने अभुवनीहराः भ्रष्टश्राभर् इसके रेनेडे हिल्मभण्या ३३, पुरुभ्या मुद्दे प्रिक्त राउ:१हे: भारति कि उठिम्स्मम् हम्यहमः दिस्विक्षिर्मा इन्त्रभर्भ द्वाः अशिभाग्य भागाम्य मन्द्रमकः लभुक्तियाधिकः रूभम् देश्रम्भद्वराष्ट्रिकः अनंश्राष्ट्रकरान्ध्र अभाभारतभा के वित्या ए किया एक दई उचे शिराष्ट्र वैः कदकः कवयेः प्रमाणवारमुद्दे मुद्दे राणग्रम्भयिक विशिव्या अग्रह्म महामार्थिय पित्र विश्वयेत्त्र ग केंग्रेंभ्य स्थार हिंग्कः विवृद्ध पक्ष विभावस गाप लाग हुन् में ब्यानित्रभूत्रम्यक द्वालंकलेणवरूरियोगी विस्पिषु उते हिंगेपिमसर्देशे किविह इक्य भहारय मिविषकः उत्याष्ट गः त्यम् प्रमुद्ध वर्गाष्ट्र भूते भुद्धे विरुपा भाष्ट्रः

विरमः मिल्य

हम्कः विवागराष्ट्रभाभूरभुर्भ्यभेविरकार्कने भ्रीयम नेथुरार्ख्य विश्वाप लीष्रभक्षक्षीराभिष्ठिकाल विवक्षं मिक्रका कि है विणिषु प्रतिष्यः किया है श्रीविण प्रति थिरु पुरुष्टि विमयू लिय मक अयेष्ठ मुक् मक उपिमा भई विनव, यर्फः महोव उमजभूषमल्गी राभुको, हरूः क हिवसिंधः भाष्मिति भागिति भागिति विष्ठः इति । भाषान् अस्मा इष्टलक्ष इष्टु इन्। गिरं वसुप्राति भक्ष प्रमया। प्रक्रमया। उद्येव युग्सुर भुद्वभाः क्ष्य अभिष्य मुक्त राज्यक्रिया उद्देश गड्नाः क्यु उत्रीतमक्ष्मयेग यु चंद्रगायुक्त प्रवल्मीबलिकंग्रवश्रष्टं भव भरणं भट्ने रमभुश्राप्तंह वडी. विचल्मग्स्र पद्भार उद्यासमी एड प्रहरे रहा मिल विश्वयान्य विश्व ए ये भविष्य के हर्य भेवा भी उसे हैं वेग भेपतः मगीं है हैं उन्म के क रे भिना प्र निश्चिम् वहारिएः भुवंक हिरित्यः प्रकामित्रवामः माङ्गरहरीकालभाश्चाक्रीक्रापीन्यम् सामान्यम् हीः भगवारि, रमञ्जूष्यक्रप्यार्गिराम्यक्रीर्रं, प्रभुतः यद्भ रस्ट भुद्र भग्ने कमुकमु कि प्रभुव कर यूँ विकल १ वह शिक्षणीवलन्ध्र स्भाष्ट्रगद्भक्षेत्रम् वरण्यस्भद्भकं सिंप्रका शारिक में त्र में हो करें। ति है। में किर्या करें। ति किर्य रेपारिषेष्णया हो भे भे द्वार कि कि कि कि निर्माण विकास । क्ट उचे: प्रष्टिभाष्ट्ये: प्रमाः वरून यप्रभी: उद्रश्वहनभुद्र वयसभुद्रम्हभयि, उस्र किक्व उक्से वर्ग प्रमुखका

प्रति व

यं नगनूगा भणारिधवरण या किवं भचमवर्षं भर्षः भूरिध विधामम्भयपूर्यक्षाव्यस्य प्रमा किन्मकलप्रवृक् लंलील विलभविष्टेक किलक्षिरणीर निर्वणपीरण अप्राचित्र स्टब्स्ट वे वरुयहि क्रिन्म उन्यान मान भागुभि उर्कलभर्उणभर् गिउया हा सयी। हा ए श्री क्रमुउजल्मं, भउराद्विण शियमंदि ल्बुदि सम्भिल्ल विमेड साउ विमेश भारत मह सहक डिगे सा वाली साम भिजनिश्व भिजनिहरू येय निर्मिय । भिजनिया भारत्या विकारितामा व नी, उस, मृ सूचनम्यिहर क्र्यूम्भागियका भर्षाक्षका क्रियुभ भड्ड अ उक्क दिनीय उद्देश्य भवाय हमारी र प्रतीय लहा हरे रूभ भूभनः गुल्मि उर्द्युम्मलका भीमां इत्रीये रहे यहका भिग्रहें। वसंवज्ञहरं भाष्यीत्रभाषंगारभावभेत्रभमेक्षीः इशीरं पष्ट नंभद्वीरं भष्टा भूगपेतीर् भक्षद् ि नव अग्म भभूवी विक्रभाष्ट्र जुरीएक मार्यभी दुर्शाभी, मसम दिरीय यम् युटिज हसीपहराकुउस्मा इर्ग्यु विहरातीहरी मार्स्य करिक्ष भरमारीती ग्रहारिक संख्यार्यः यम हेन्द्रु किनेः कर्ण्यमक हति मिल दुवा शीर उद्यामिल वर्रा मुक्ल भविष उराम्डरं विश्वया विरामिकर भाषा । इन्द्रं नयडीहरू स्थित यम गमयुक्ति विर्णिएनः विविधि भण्यिएन कि भिद्धान कुर्राभगउरित्थाम् प्राविष्ट्रग्राविष्ट्रग्राविष्ट्रग्राविष्ट्र न्दरिक्षाभियोग मुभीदुउस्गर्यः अथारः मृक्षे निष्टमकलमबलेंकंकियु वयरीरिधारिं म्यूप्यमार्ग

उम्रुमित्रवंशियाद्वामज्ञभगयिद्वामज्ञेष्ट्रामज्ञेष्ट्राध्याद्वा

क्षः अस्मित्रिक्षण्याम् विद्याणः प्रमुख्य विद्याण्या व हर्दे सेर्फ्या अवगति क्ष्म् मार्गिक्त विक्रिथ्रा विक्रिय विक्रिथ्रा विक्रिथ्रा विक्रिथ्रा विक्रिथ्रा विक्रिथ्रा विक्रिय विक्रिथ्रा विक्रिथ्रा विक्रिथ्रा विक्रिथ्रा विक्रिथ्रा विक्रिय मन्त्रिम्पित्रिम्प्रविष्याः अयभविद्विच्य्यम् स्वाप्त्रम् भ्याद्विष्ट्रम् मुद्रालाभिष्ठाष्ट्रम्ब लका ललसम् उर्यभभ 3923" भिरमी: भूकप्ययुग्नियम् स्थाप्तिकरिकाः सुरी ति॥ विमीरभुमें विश्वक्त केमिनः श्रेष्ठ श्रुष्ट या भित्र वह इयउ वेभव्यिः अपन्दिसिक्षेतापः॥॥ भव्याभिवापि युधा हा एक मिं भू यर् उस भव भैने के विक्य विकास निक्यम्याः, इल्याचीभ्रलक्ष्रिभाक्षयक्ष्याल् उद्घाउ तिसु विश्व प्रमाल्यिक हमग्री , इयम्बर लेखिक हैं। ति रेहिमिन्स्र हार्ग में अधिक ख्वभ र्य ये गिर्दे रेस क्र शेर बीग भे मुद्रा रायनेभूक "इभूक निम्माक निम्मुद्रीय प्रभावित विक्रहाक्य इश्वीमयमिक्र क्राह्म अधिरः स्रित्र स्थाप्य म्भृष्टितिक्रकार्र्णयेक विग्यः, भप्रारिपेरिहत्त्रम् मञ्बल गङ्भपमग्लेष्ट्रमाङः,कीग्ममुभवविषेः सुसुय केम विभागाम् । निमान्य विभागाम् । निमान्य विभागान्य । ररिधि उस विष्यु भीग्यापिट प्रविधी वाभिका असे हिंगी। कीएम रापः प्रभवता भूगि स्वित्ति सुरुक्ति सुरुक्त थि। मुद्रिश्च राष्ट्र राष्ट्र इसे दूर्नीयभी पडें मी यर राष अर्हेनहें करामध्य में श्रेम निद्वाली मिट मुक्त होरा निवास कराने अग्रहाम् अग्राम्य के दिन एक मिय विश्व श्री सम्बन्ध के समाम के समाम

भिन्न ले ज मार्गिक छगवरक मार्गित होते रूपार १ भ िकपी है है उँ वपी से विकास के अपने के प्रति के प्रति

本小小科3431

किंग उकिंगुणः भूमाभूमुण्य नामल्य अञ्चलकार्यिक भाष्ट्रय हवचाउयान्व, भुम्र यय भवर एड्ड भय भवर मुय भिः। विकिउड मुद्दः मुद्द्रामहत्त्राम् स्मित्र वृत्ति कलामु वहाँ मुयान्तराद्वाविषे ग्रम् श्विमु यव्यापी । ग्रह हु द्वारि युव्या भ्याभकारित्रं अवाप र भवभित्रं राक्तिराप र उस्न निक्राण्युपण्यापार्गः, किंगः, उत्तीयं श्रवतं जिल्ला रंगयलहार लग्नुः भ्रम्भाषाम् भव्वरी, उत्थिभुमुक्तरि त्रक्रयेगे मभी र्भम दिस्या जमनः रह्याभिष्टि विलाह्न स्वतिः विमानं अवभिकारिक भागान्य माध्य हुका विगयम्भुरान्निधल्मिणीयाण्डरान्भहन्भन्भार्ति वाम भव लगाम्करः भराभी मुस्तामल हो। उत्तिकेव लेख नक्रभग्रेभ्युतिराउभिष्ट्रकलय् इन्त्रेयुग्विग्उभ्यभभन क्वगीर्द्रको प्रदेश पद्गी प्रमिश्च , एवं व भू लङ्गाम हर्णे क्यो प्रशिक्ष प्रमाण रिण यित्रिसेके भी मिर्डिशहा: मिर्गिर एड्रिशिय में विष्ण हार स्मामा मिर रुभिक्षिणक्रमण्याय भूयरम्भू विरम्प्या अस्ति । उच्डासुरुपत्ती।। वर्षेः कहार्विदिः कष्टासुर्य विवितिन क्षित्रः राभाग्ययम् भभाग्यः भभाष्ट्यः उसुमहत्त्रयाग्राभाः पुक्रमभनश्च युक्तवभद्वरणायः, उम्हचवाकिरे माभी विक ल्य भगवति क्रिक्य मकी उन अस्य अभिगेउन इंड उसम्म गाउम्मुकाबीत्रश्मकयःश्रीमम् । ज्यानाम् मुक्गारम् भाषा

वन्भद्भार्य पद्म स्र्येभ स्र्यं यसि भ्रम्भ स्रा या उत्तरि रिज्ञ या येगाउँचीपय क्रेशिनुपरागीकृष्टः एक मिर भु न्वीपगाः सूव क्लिको नीउपसुर्वेकरीत्र्राष्ट्रप्यभृङ्गि गिनुष्ट्रेये निर्देश क्ष्यम् भावण्य वृष्मग्रे क्ष्यस्य वर्गिभाक्ष इति एवं ल्यिलीक हुउ विदिशी सुन्मत्स गुम्मत्स गिम्मत्स गुम्मत्स गुम्मत्स गुम्मत्स गुम्मत्स गुम्मत्स गुम्मत्स गुम्मत्स गुम्मत्स गु भग्रुभथामक् बलके १०किमक् ब्रायी, प्रीमकः भ्रुभग इंस्रिम्म भूग्यम् उम्मस्थिवणम्मा के उउया निस्य हर्वे भ गुयगरी नगिव्या भेडियर । ब्युडम् नग्रे हभरे ज्ञेभिर्मृत्वामित्रवर्षे यद्यभभस्भग्रह्मं त्रहरूष व्याभु म्मभभरेषुः,कष्यानिद्यिश्यल्यिकल्ली, उस्महर्याद्रा गः एक्उयुज्यं जीमहि। हिन्द्रभिव का भूषा भन्नकः स्वित मान्ये इंडिस्योधः भभभाषाः मन्भागमम्बद्धिः सिमीहि गतिस्यमक्तायम निमाः उग्डीक भर्तिः वियुतिमकः क्रम्य इतिस्वर्गं, गविस्य १यार्भपडाकाणमान् भण्किरियम नमिश्रिशिश्राम्भम्येव भूद्र उसर्वियादि ि । इतिकार श्राम्बर महाभागके म् अकर्यु शर्मक्ष्मित्रकृति अअधिम निमान्याउन । उन्तर्भानमान प्रदु अन्य प्रमानिक मिन्य प्रदेश स्थानिक स्थान त्त्रमतं अभाषात्रमुप्ता के उत्तर होति। तद्वतारं एउ क्रवर पर्मे पर्वपरे विभिन्न मिनिन्न विकास क्षेत्र ज्यान विश्व क्षेत्र क िवं उद्युक्त, अभुगु नुअय्यन द्वी अन्वग्रुक्त निर्म भूमि अप्योभी ह्डाइह्य इम्मूक भभगष्टाः भभगाभगत्रा ह्याः अक िउइध्तिउस्ियस्थिमाभायभूद्वउद्यानीयं क्यार्भाभवतः ३: विज्ञाभम्ययंभेन्द्रभह्यवर्गाम्यः भिष्ठितः, राज्यम् हिर

ह स्वाधित विकन्पत्र क्रिअक्डिम्यायि मार्गाक् इंनमहिष्युं प्रक्षाया अस्ति । मुखंडरी में हु मिया मंबहिए सि: माहुउक ने में भ र्वेक दिमिस भगद्रशिक्य हजा सिष्ट्रयेगः तुरिणापृथि उद्याष्ट्र र योव भार इं या थे प्रकार विष्टि । भार वर पिरियम भार्वोयुक्त माधिद्रभं ब्वारिव महम भार वनपा भारतभाष भुमुम् रंग माः भक्षा रभिष्ठ रिष्ट्र भारतीय इं अम्भारवरीएक भारतजीति भार हर्रि । इस्पर्य प्राप्ता मन्युण रामभुवभूभभुवाः स्थितः राभगुर्वे वभुत्री वर्भग्रेविविद्यः, नव्भक्षव्यस्थलयः भक्षवायः यद्ग्रह विरागुभविद्युभमहाभिष्टमङ्गक विकल्दङ्गी रङ्गसभूविरि उण्डक या या मारा वर पिरं विकल्पाव उमाइ वर्षा वर् विभयः उद्यू भूत्र वर्षा प्रमान का विभयः निर्वेग मुरीउपरभजारकपदनश्वि यम यीम भण्क यभुयम् अभू कि हुका भण्डभण्ड यत्ने ये सुरः क के भू वय वाऽधः गरुरुवक यस्प्तार भुग्ना भवलह जीक्रा ल्येवयम्निस्उडिक्स्निम्पिक्यंग्रिक्यंग्रिक्षं भूभभुषाद्वमवा अद्यानभारत जिल्का उर् भौभवा प्रकार नमरोअशीभणकडियब व भृद्यीतिका भिद्युंभण्यिव उपियाति नेमकावगाउन कला शहुन मुजी उप्तारित नेभीपना नवर्त्रभरं जभगीधनुरुद्धसम्प्रभाषभग्रियु उभ्याण्वै उभू णर्भित्र शिभित्रक्यः । उर्क्विकिन्म् मुश्यः भक्षः मक्षा अण्ल द्वार्णभवमग्रामिककिकिकार्रिक्तिकार्गितित्रभग्रामक्ष्रभय

वित्रभः मिव्य

क्ट्यार्टमेल्फ्राःकश्चिम्हीभ्येम् ित्रगल्याङ्कः ५क्यः यवारगिलाः भमेहक्देवराठविडिडीयः, मुबमेठक्री हबार ग्रहम्माने एक्यु लक्ष्मान हरिया रामानुरकरल उक्यिक्रिय दिन्द्र सम् इतेष्य लक्ष्य स्वाप्त दिन दिन उद्याधिकि विमिधलम्याम् इत्था नुरम्य भूष्या विविधि रकारणभमाष्ट्रम्, उषा पिग्रणलक्ष्मारहिनित्रवाद्य एवा वसर् एमिन्ड भर्म प्रमार् हार कि रन्तिहराअति प्रवितिहरभक्षिणम्मक्र लक्ष्यवस्थायु पद्मिक्तमंदरोलक्ष्मक्रक्राहां उर्यसं क्रम्थालिर ३ज्ञथकर मृद्ध भ्रयं गाकर निर्मा भारति । ने उत्वरक्षम्भी निम्मान्वर्ग्य भीरियग्रीयः रक्षाः एक्युण्विकल्पिण भ्यम्कार्यण विकल्पेटे मञ्जितिशाप्ति विकल्प ५१३ म्या विशिष्ति विकल्प ५१३ म्या विशिष्ति अस्ति । अस्ति अस्त वक्ष्यं वक्ष्यस्मित्रियात्रियात्रियात्रियम् गण्यकृतिः भद्रभच्यितिष्णः भागः मक्युयदाञ्चलक्ष वृतिः उद्यापि विर्वाणय वेशु अभारति वे भारत्य सिर्वेभ उद्मक्तनं भुरुपभय्त्रक्रम्यु लङ्क्ष्म् । सह्दू दन भिर् उमक्षाल्यः एवभज्यं गरुईसुउभाष्ट्रिश्मार्थेष्ट्रः भद्ध ध्यापदविभाद्वत्रगुळ्टाउरागुळ्लक्ष्महाउराग्ने प्रतिक्षेत्र र्जा भद्धारण प्रशिक्तका विभिन्न स्था अलक्षा हो। भित्रमुक्त्रकारिकवी प्रद्रियम् मुभाष्य भ्रम्य भ्रम् गण्यस्य स्वास्त्रीतिः, अव उस्ति वित्रा वित्र वित उयध्यमण्डलक्ष्म् श्रीक्षित्र स्न मुक्तिवस्न उम्प्रितिष

उद्वीगिज्ञ स्राप्त्र स्कू अस्ति स्वीहिभिद्दे हो जिन्द्र स्वापित च्लाक, उप्परिक्रिका वाउपडरी, रैवक रिजी के उन्हीं कि विक्र हैं मि मु उष कु न रामा भीराभव भीराभाग भाग भाग महारा है। उया भक्षञ्चलिख्य भ्रष्टभञ्च अप्रिक्यिय एवन उपभूषान जीरियेत्र सम्याये वाउप देताः, वर्तेत्र सम्याप्ति वाप्ति सम्याप्ति सम्यापति सम्य अथर गुरिक लिंड रेगारिक य विष्युय अभिजीतिह अथानिकलिय नेगाविष्य विश्वास्ति विश्वास्ति । भारति । भारति विश्वास्ति । भारति । भा त्रगड्येत्रकृषिकृष्ट्रभगः, भडापवर्षः पान्यनिविधः यः पान्यनिविधाः विभागान्य विभागाय विभागान्य विभागाय विभागाय विभागा विविद्या । इवल क्षेत्र कि विविद्याः अहलि । भूग्रेक्ष गाउः मुबल्जीम्मीभी, नीउयम्गी, उक्निशिक् कारोधिगाः स्व अनामाधारिमारेमाराः, उद्वितिक्षिरीः, उसुक्र राष्ट्र किट्टी की मिर मामिति कि कारिय यम्हेर्मलस्काभद्वभावकडवगुरुमिरानीत्रम्यंभ ह्य अप्राचाभर्ग क्रमी अस्ति अस्ति क्षेत्र क्ष अनु पानम्म कि । विम्म वडी पारं नम्पनि । कि निवस भड़ एक विमें भे प्राप्त के विस्ति । विम्म वडी पारं नम्पनि । कि निवस भड़िक कि विस्ति । विम्म वडी पारं नम्पनि । कि निवस पारं कि विस्ति । विम्म वडी पारं नम्पनि । कि निवस पारं कि । विस्ति । वि विश्वतिसम्मिक्य विम्हीगीशिष्ट्र उम्मे क्रियं महिमा जल्यं सरः कृतिभागिनीय सम्भु इक् विश्वतिक्षा व उम्म्बलं ग्राह्मं भहिमं महिमा विम्हिता क्रियं सम्भु इक् रूपम्मेरः क्रियं क्रियं क्रियं मिन्हियं भीमा यिति क्रियं क राजाकाना मान्य मान्य मान्य मान्य प्राप्त मान्य स्थापन प्राप्त मान्य स्थापन प्राप्त मान्य स्थापन प्राप्त मान्य स

छिनभः भिक्य

र्वेम्बु प्रान्तिमक्ति कथ् म्र प्रान्ति विश्वी शिवा के मिर् लिंग्डिं ड भर्यायम् भर्यायक्षेत्रार्थार्य लनहार्वितार द्वितार क्षेत्र के के के कि उनके के व विभिन्नि निधमप्रदेश रेमक्य अधुपर हवर्ग गिपमप्रदेश उनुलाक्षार्रिकार्य। उत्तर्वाद्वादिसमञ्जूनिपक्र भेपे ज्ञात्र सुधारिक हुए । उर एउस निमन् व से स्वार्थित कि स्वीर्थित कि भिन्निक्ति हो । अस्ति । अस्ति प्राप्ति । अस्ति इर्अत्रहिर्गिकः क्रम्यक्रम्यक्रम्यहरू यास्तिक महा अभय अभव का हा नक ने ने के अभिक्त में निर्मा याका ग्राम्याक्षिति । भागान्ता भया नः भणीतः सहस्य नः श्वितः । भागान्ता । भाग सुरम्बद्धः चरगुलालक्ष्मानित्रभेगम्पिरः मङ्क्री यभहत्ववण्यभूकपमण्ड महारी, ह्वा वंडम्पिन मुवप विद्यम्भय निलक्षियाउइ इस्टर्मिक विद्या है। नम भे गडारीउप्त भूरीक भूरीयः क हस्य किया क्रिसी येक है उसूह वह इवं राष्ट्रिगीर निक्वरीय भिर्मे र भिन्नि प्रभिन्ने प्र अरंमद्रमे उकु अलङ्ग सी श्री भुगम्पाय विकानि याभानान्य युक्त नं, क द्वारक प्रश्री, क द्वारक प्रश्ना उत्साम निक्षिः कष्टस्य द्वार्गा, नाकन्य द्वा द्वारवग्रीर दम कृष्वि। भग्तस्। कुमीउमी स्वितिक्रियमीटर् यस्ट्राः उदि। भरूमस्यादिक ब्लक् लिएकः नत्रया म्हमभू र्षक्षा प्रया एनि उपवमक्ष्यः इस्टिमा द्वाराभक

कि रिंट

बलका भक्त प्रात्मिक विषयी हमा कर्मी यम ।पङ्गलकां किमीर्द्ध खुउप विषयम गरियमणः भक्लम्फ सुमकः भडा भगिष्ठा उनु विषिषः भगुनि विदान भिष चेठव्रिनापङ्ग ५२२ वज्ञ या पद्म पेष्ट अनाम्ब क्या की समा वापन्निभागीवेभाउड विज्ञान्त्रा व्यान्त्र भिन्न किल्लु हविति विकित्रीभीडियः उपदेशकलिद्धि। विद्यापि उद्भगस्ट्रहिश्रीद्धमङ्गमकलमहानिक्को। एवं कि न्त्रियाकितिहां मुम्मइर पां ४किट्डिरिड्स, यथुड्रिक भू यंद्यस्मि सि हि जिसे मिर्मि के मिर्मि सि मिर्मि सि मिर्मि मिर्मि सि मिर्म भीश्रास्त्र विक्रिमलक्ष्मक्रम्य विक्रिक्षिति लेक श्रीमधीभी उसूर भर्च भ्रवस्मिष्ठ यो जिंद उद्दृष्ट रथं लंके जिस्तीयं अन्यक्षिकारी अन्यक्षिति हैं। उल्बाल्यसम्बद्धि।उन्दर्भावकारिक्षाः॥।ना वाने मानवार्वे महाज्ञ मुळलं हु गुरु मु अविश्वारिति याराध्यान्तिवित्रीभर्भेगक्नोम्भू तु इर्राक्ष्यभाम दु उत्री यभहरवन्त्रभग्रेश्वार्भग्रिशा भागा । भागा अस्मा अस्म अस्मा अस्म अस्मा अस्म अस्मा अस्म अस्मा अस्म क्षयेयः रमभूवर्वेष्ठभाग्यमञ्जूष्ठीय क्रभरीयक्भ निवरभपभुउन्निज्ञ चर्मारुद्धि भूतिह वर्षे उभाभराभभू वर्धमभगष्टभग्रका न्यद्विद्वाक्यांभुग किछ वाशिकन्याभान्ड्य भन्द्रियक्षित्र श्रुहेलक विणियिहिः रभिद्वेग्रेटिबर्ग्य क्लेम् वार्विविभीउर लीकभक्तमप्रदेष्ठण्यन भज्ञिला लेगर्के हुउ विभाः भक्तभूमिशियद्भिक्ति र्यक्षित्र अक्षेत्र अक्षेत्र भक्षेत्र

राग्रियां मध्या मार्ग्या अस्तर् वा प्रभारं स्वितः त्रस्था प्रमा उद्गेकिश्विमीभूकमधिउमर्ग्याम् माया अस्ति। यभि जिस्तु कि पुरभरः भुद्धारिभा लक्ष्मी हुर् जैरामि गर्ने वन मेंचर्डिमुहंग्या कड्ड्यू विराभभावाभिरिश्रीर मंभक्ति निर्मितियणिकिस्थारिन थार्थः स्रु अंप रेशा। कुत्रनीयक्षिति,क्रमीयमुक्भमप्तर्के देशीय वडी नन्विष्ठिडीर भमें हियद नक्षिकु कमी विष्ठि कि उपमार ग्रेश्च यानत्रभूमाकिन्गिभाष्ठदाक व्यक्तिक स्म हुष्गाभभवकं भारता वर्गायकन्पर भिर्ति वजी विवक मनाः अमुजी ब्राजः अमुजायो। वागिषण रंभारः अस गाउनीम्युरक्पेरतः मिक्षणयीम्युरक्पेर्भाष्ट्रयः प्रका लेमड्डी भिक्रणमञ्जूक उन्ने बल्लक्षीय भूक्रभभाउन कल्लाभार, जीउणव यम्द्रः, क्षृष्टमें स्युक्त उप्रेणम् गुल भुमीमयक्रावभुलंक गडी श्रीश्वीरिशिवीश्व में भूभे भग्यवण्यं पर्वेषा उद्देश उत्तल्सि भृद्यक ह विण्यतिभुषुवर्णम् उद्यमपुर्गः सी भुतिभी ने धः अपि मक्केर्याङ्गीक्यः, एसंग्रेमी, श्रयंग्यः भरमुय भगाउँदेशः, वाधिकत्यवाद्ग्रविकित्रशाहराष्ट्रभणप्रक्यः िवा उम्पर्वण्यभाष्ठिमि भिष्यभाष्टिव वार्षिं भाषणाल अपसंदराः याः मिष्ठकड्वगुल्लल्द्वरहेरही विजाः याष्ट्र शीमित्रसम्बद्धः याष्ट्रभिर्द्धः द्वीपर्याः भ्यां उसा क्रिड्यः, राम्यभरत्वम्भरत्वर्गित्र नेत्र प्रियं क्षेत्र प्रियं णहोती, गुजुर्भभारकलक्षिर भरेग्मर भाग्मर क्षिर य उसलाह । भेउरभर भूद्धार सर्गे जलाहर जनक 那。

या जिल

रित्र भाषिक

इस्वेनियां यर्वेनवयर्गितिम्बालक्ष्मणे वेहेनिक्र्यां भेष एर उस्ट्रिशिप्रकार गुर्जा बहे कि महत्रभाग नुक्रका हर्वन्मच लक्ष्म हर्प उत्र डीक्रीम्य उत्थवन जैन्यित्य भिरुलं शहि। गाउनगारिक गर्गा न्या अभिति। १एउँ। ्राण्ड्रीक्षडम्बर्किर्विरंग्यम् अनुनेक्ष्यम् मकीरिक्तः, व्यमग्रहत्विकल्पः स्पद्धल्यः मण्णाः रहे ग्रीमिभभुग व्यायापिक ग्राडीया हा या कर मिड्ड में भारत महाश्राय भविधियः।अभेदारीस्या महस्य महस्य वरप्रणाहिना अधिकार्था।।।। इस्रमान्य । महाज्ञानिस क्षिंक्ष्य नंगुलक्षिण्या अग्रहारा वर्षाण या मन्मस्मिद्धी रिक्ष्टलब व्यक्तिकि व्यक्ति विक्रिय कि विक्र अक्लियाः उम्पिरा वार्क् वर्ष्ट्रच्या विकास निभाक् भूलक् उडिपाकिन्युक्तां हाना कु भर हि।।।। हज्यम्भूषिम्रिजः यभक्षिप्रहिष्ट्राह्म्ये एहज्यम् क्रीमिरि भगुरुप्रभाषान्य किएनं हुए उसे हु इंथय जिस्सी भू वे भाषा के किए के किए के सम्बद्धित काः, यमपुरः महिरायाभाउर रूप्या भवायाः वेपरी स्तिक्रामुक्का विद्वितः, रामुगाउति क्षिक्र काः, वितः सी प हमभी भेडे करणे मुझ् । मयमे भूयरण देशी र मु ग्रम्ग वैभाष्ट्रज्ञ नण्यिभिषु अयोरणनीभी ३यम मुन्य थमण्यनी र्णिस्कृत्वी क इस्रांगुल्या कि भिभागारिक र एक यं इचः।

यहश्रविविधाव द्यारिक विश्व भन्न प्रत्य के मार्थ के ब्या के विश्व क रिभि उसपिराम्ये वस्ति अङ्गी उन्हें भिरु वर्गा, विविधार भाव प्रश्रहणम्ब्वविकिर्वे मुद्रभणगण्यस्यिभिर्वकृत्रः उष्णान्यक्षि हर् निही स्कृत्रे उपराप्य प्रतिः स्रिवर्षे

वेश्नुकल्लिभुख्तिः भिरलक्षण्यक्षण्यः

वेश्तकल्याभुद्धाः । महात्रका । महात्रकारमा लाकुउउया क्ष्मीम् विद्यम् भणुस्यम् । कि भिर्मिक, राज्यसभी र असे वर में के असे में में रेस रेस रेस रेस मन्यस्तरभण्येच दिवा मकस्या भगुल्यि । महोत्रान्य इन्ल्बन्डभनंग्रल्याद्विष्टिहिण्डूपाः, गाउनेख्वी प्रनगीरिक प्रहारिक प्रानिभारिक यिष्यि भूषा पूर्य मिर मकारूपारगी निर्देशकियो भारते हि वैत्री पारमें ष्ट्राप्ट्राप्ट्राच्यारिभू जीयर मुहत्या नत्रक्रें प्रतितृत्व। डिगिर महाकू यहिपागी महिन्। गुल्लाह्म अका जीयका म्मया। हर्दे हत्यभा प्राप्त कर्मके के महस्ति हिण्या गड़ि म्रिण्यू सुम्बा मुं हा एएं हिंदु स्ट्विट स महारा भिष्यू भि पट्टिंपीमिष्टिगुलक्षित्रम्पि मार्मिट्टिक्षण्येक्षित्र गि, भुनक् भुड़ा, उभुवक् निध्यमी लिउ यम लिपा भी भ करमु अडु भ विवरं कर उसमज्ञविष्ठ अडु उभिवर्क है। अडु उ पलाहे मध्यनारिकलकल्पयम मुरग्री भू त्राभर ली। म अल्बल भीक्लुवभंजभी। यहबं रयेष्ट्र अध्याभिकाः नीरश्चे ये वस्तु देशिक भगे मां भक्त में यह भव स भगष्टाउवाः उत्वाविणभविभित्रम्भक्ष्यभाः श्रीउयेउयु उपकार: उस्रिका: भ्रुपंभकल भ्रामिक्छेपरि

अकुउभिग्न भाग्यभागी विश्वास्य विश्वास्य न्विहिष्नमी लिउम्बे मुब्य ग्रंभाग भारत हम्महा निलंक अबर्गिभू द्वानां निलं भरुष्य रंभ ने अपि लक्षंत्रीष्ट्रिक्षिणिक भुउता मन्तीतवभूय द्वी मुशान्त्रभाय इक्षाः, लिकार्यश्रीगंद्रहर्मियः, प्रमुक्ति विनद्रशास्त्रभव मा भष्टभा भुउक् भे लगुर मिथि महिक्त भक्त वर मुहु भुर्थ अवरा माध्नक थिउ राष्ट्रा ५ वित्र म् भग्ने कड़ा भू गरमं उत्ती, व्यक्तप्रं विशी थी है स्व के निर्देश क्र उद्वेशी परेडे द इक्ष्यम । ज्येविष भ विभाविष्ठा निष्ठ र स्थ भूभी मुभुभष्ट एक । यो विभारि भूक र में स्वर्क उर प्रतुष्य भड श्रिविश्व भारित्यं, मारिक्यं कि विश्व कि विश्व विष्य विश्व विष्य व र्मे रहिर हर्र एकहवः भर्रहे विभागित है उद्देश हरे भूगोलने माभुर्यालन्यभाष्ट्रभाषक हवार्तं सुष्ठियर यल्य मन्त्रयमाः शाउविष्ठिक्रं द्वाष्ट्राप्ट त्रस्कीति विभित्रिपा पीउसेरिकः वर्षः सु विश्विमाधिकार्यमुन्त्रः सिक्ट्यः प्रभाग्रापापदायः, प्रवि में भारितर मह्राक्ष्यात्र निम्ने निष्टर मिर्र भूयोग्रेमधामधितुंग्रातुंभ्यकमृत्रात्रीभाषाः भूयोग्रेम राभग्नभएभक्तमुभूये इंग्यू ग्या विषय अधिक वर्गिष्ट भया भी उचेउद्गु भर्यक्ष हुउया हु गूर्य प्राप्त महो हु यका ला भद्गेर्यान्य विमिश्विकल्प पत्रके द्वरान् प्रचयि अकल र्यान, भक्लमहाभड्डविमद्भिष्ठपुक्चलम्बिध्विष्ठिति। निरकोडि, मुरिरमलीयिभिडि, हज मुडिरिक् भर रहिसिक

वदःगङ्गयं भेषडररम्य क्रियो उपनिथ्र उमक्ति असम अला अयुका ए कि विग्या अलीय भीरितिहास्ति ए नक्षानमुद्रदेशम्यी नवम्हिक्त मुस्य म्था मार्थिक किर यम् भिक्र मिक्रिं उनिग्नक मीक्रों। माभाष हरा अव र कि व : १६ विभवीं के भूति हिर्मु के १ डि विभवीं लकायुङ भिद्धार कर्म भित्रभविषयेड । अरम्भी लक्कार के लिक्क लक्षेलक्ष्मित्र्यात्रेलक्यात्रे उधे लक्ष्मित्रा भारत भिट्याः, भक्रम्य निर्धित्येषं कं श्रुमीला हु भवम दिम्मी क्रेडिमी अपने व हरीय उम्मी हर्तिय हुए उद्दर्भ व भवार हरा सि प्याः यम्डे, ब्रेडिक्यमंबर्यी उस्क्वरमेश्वः, मरीरंश्चर उत्तरम् धुक्षां भवा भिता स्वराहित सम्भाव प्रातः प्रच द्वेयवया भप्रतिने भवर भाष्ट्र उभग्ने विशिष्ट वया। जै यक्ते विशिष्ट र्गियेभे रूपर्गे रेशिन युक्तः उस्मिद्धिरिटस्य इरुप्तरम् १ उति, उम्पद्मिं हर्वा उम् कृष्टिण हर्ना सम्बन्धिक गर्म क्षेत्रभणव अरवासी भेडा हुनी, ह्वीड भिरामी यमें ग्रें ब कहाभिया भरे नियु गिरियाहिता। उस्त्र नियु अरि र्येल्डिस्कुर्गम् श्रीमिन्निभवण्यविष्युभिति, उर्क्वभुष्यु रुपिशीर्गिमें भण्ड यह की दिश्व महाना भारती है से मुंद्रा अध्याति विक्रित्ति विक्रित्ति । यहा अधिक विक्रित्ति । विक्रिति । विक्रित्ति । विक्रिति । विक्रित्ति । विक्रिति । विक्रित क्रमी श्रीडिकभायक श्री स्वारी भाग उपनि । इसनि । इसनि । इसनि । ने भूगने महस ४ इमाभा हिन्द्र कि सम्भू है भिड़ साथ उह सूरी क्रमार्थित्र । क्रिक्ट क्रिक्ट इस्ट्रिक इस्ट्रिक उत्तर माभ्य वुलक्षिमिधारी गुण्यस्यक्रायकाः, भाउचनकृद्दे रुगिपण्यक

क राहे व

स्विभः मिनया

एक प्राचिक मार्ड हम मुना डिम्म मुना मार्ग स्वाप्या रहा रहा अहम्यहम्यहम्या भी है म्बा या भिव ज्यसुंगी भिट्टि गमु दि । हिंदे वह , समितं । प्रमानि कि भीवर ह विज्यितमी मुम्पविभाग क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र भयं वश्वीति, उस्ताम भीक्षाितः व्यविष्युभरभः सहय्यम् वडीष्युरंगुरं किरियान्तरी, यस प्रमुद्धारिश परमाल्ला हो अराभरकर्मिन भेषेत्रा अस्य इस मव भेष्ट्र वर प्रायेर प्रकृषेत्री गुज्जेव काभः, एवंग्रज्यः क्वः मुउन्नभाष्ट्रप्रयोग्यभा, नव्यानिश्वर्भ रेकभङ्गीः क्रिक्यण्डरमङ्गभङ्गीकेनुभव्यानिकं कर्ती। अभागरत्या विद्यान्त्र हिंश कंग्रणीयः भिष्ममुद्रे स्राप्त कि स्थानित कि स्थान र्षेत्र भग्रुपाय भागः वस्ति यस है। अस्य है : अस्य भगवारिक हमा। उद्गी, व्यक्ति हिंच्ये स्वरण्यामी उद्गीः क्रिक्स् अक यम अवस्थित क्रिक्स के उस्याभ्याभ्याम् यव अवाम निर्वाशिष्ठ विविष्य विश्व मिल्या म वं कुभिभुद्र भिष्ठ्रशीयभनं में हिंदुरा श्री व सुरे भगमी दिक गर्भे उभुद्र भाग विदेश श्रीय भग विदेश श्रीय के स्वीत के स्वी अग्रचंद्रशिक्तावश्या मीर्वेक्ष्ट्रियिक्षेत्र स्मार्थिक स्मार्यिक स्मार्थिक स्मार्थिक स्मार्थिक स्मार्थिक स्मार्थिक लाक्ष्या भागा लहाह द्वारा असू भागा । के कि द्वारा असू भागा । कि द्वा उन्निक्ति । १६०० महत्त्व । अवस्थान । १६०० महत्त्व । १६० महत्त्व । १६० महत्त्व । १६० महत्व । १६० महत्त्व । १६० महत्व । १६० महत्त्व । १६० महत्त्व । १६० महत्त्व । १६० महत्त्व । १६०

